नाटक में रंगतत्व

Name: Renu Kukreti
Designation: Assistant Professor
College: T. John College, Gottigere, Bangalore
Topic: Natak Mein Rang Tatv

प्रस्तावना

भारतीय नाट्य साहित्य की परम्परा संस्कृत नाटकों से चली आ रही है । पुरातन काल में नाटक व रंगमंच का स्वरूप भिन्न था लेकिन उसकी आत्मा प्रत्येक काल में एक.सी रही है ।भरत ए शुद्रक और विशाखदत्त जैसे संस्कृत नाट्याचार्यों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया ।१७५० से १८५३ तक पारसी रंगमंच ने अपने पैर पसारने शुरु कर दिए थे । पारसी नाटकों का मंचन बहुत ही भड़कीले अंदाज में किया जाता था और वह अपना प्रभाव जमाने में सफल भी हुए । लोक नाटक अपने प्रदेश की मिट्टी से जुड़े हुए थे ।भारतेन्दु हरिश्चन्द को हिन्दी नाटक साहित्य का जनक कहा जा सकता है । उन्होने हिन्दी नाटकों को नया आयाम दिया । उनके नाटकों में पाश्चात्य और भारतीय तत्वों का सम्मिश्रण मिलता है । नाटक के विकास के साथ.साथ रंगमंच का विकास भी हुआ ए संस्कृत रंग परम्परा नाटकों के लिए रंगशाला का प्रयोग किया जाता था । पारसी रंगमंच ने अपनी एक अलग पहचान बनाई ।आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच में निरंतर परिवर्तन होते हो रहे थे क्योंकि समय ए देशए काल ए वातावरण व परिस्थितियों का प्रभाव हर विधा पर पड़ता है । समकालीन नाटककारों में मोहन राकेश एशंकर शेष ए लक्ष्मीनारायण लाल एभीष्म साहनी आदि नाटककार आते हैं । उन्होंने अपनी रंगदृष्टि से नाटक और रंगमंच को नया रूप प्रदान किया । बदलते समय के प्रभाव के कारण पाश्चात्य रंगदृष्टि एब्सर्ड का प्रयोग ए मंच पर मुखौटे लगाकर अभिनय करने की शैली आदि के प्रयोगों ने आधुनिक रंगमंच ने एक नया रूप पाया ।

रंगतत्व और रंगपरम्परा

साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक इसलिए भिन्न है क्योंकि इसमें दृश्य और श्रव्य का समन्वय स्थापित होता है । नाटकों में जीवन का अनुकरण दृश्य के माध्यम से व्यक्त किया जाता है और दृश्यता रंगमंच कि जन्म देती है । रंगमंच नाटक का आश्रय पाकर ही अपने आस्तित्व को बनाता है और यदि कहा जाए कि नाटक आत्मा रूप है और रंगमंच उसका शरीर है . एक सूक्ष्म और दूसरा स्थूल है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी जैसे बिना शरीर आत्मा का अस्तित्व नहीम है वैसे ही नाटक अपना अस्तित्व रंगमंच से प्राप्त करता है । नाटककार रंगमंच के माध्यम से ही प्रेक्षकों तक अपनी भावानुभूति व विषय को पहुँचा सकता है । नाट्य. वस्तु का संप्रेषण रंगमंच पर ही सार्थकता पाता है । नाटककार नाट्य.कृति में जीवन की अनुभूतियों के चित्र प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर स्रष्टा के रूप में जीवन की समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करता है । इस प्रकार नाटककार की नाट्य. वस्तु या कथ्य ए रंगमंच के माध्यम से ही प्रेक्षकों तक संप्रेषित होती है तभी नाटककार की अनुभूति व संवेदना प्रेक्षक की अनुभूति और संवेदना से

साधारणीकरण कर पाती है ।इस प्रकार रंगमंच नाट्यानुभूति को संप्रेषित करने वाला सहायक तत्व है ए मुख्य तत्व मूलतरू नाट्यानुभूति ही है जिसके माध्यम से नाटककार और प्रेक्षक में गहरा संबंध स्थापित हो पाता है । नाटक और रंगमंच का संबंध जोड़ने वाली सहायक कड़ी नाटककार है क्योंकि जहाँ नाटककार को नाटक के साहित्यिक पक्ष का विशेष ज्ञान होता है जिससे वह नाटक की आत्मा का निर्माण करता है वहीं उसे रंगमंच की प्रक्रिया का भी ज्ञान होना चहिए क्योंकि नाटक का निर्माण ही रंगमंच के लिए किया जाता है ए उसका दूसरा पक्ष रंगमंचीयता से जुड़ा हुआ है ए जिसमें नाटककार की अमूर्त भूमिका होती है ।

रंगतत्व

नाटक का प्रथम स्रष्टा और रचयिता नाटककार ही होता है लेकिन नाट्य.रचना को सुदृढ़ ढाँचा प्रदान करने के लिए नाटककार नाट्य. तत्त्वों का सहारा लेता है । नाट्यतत्वों का समन्वय उचित मात्रा में होना चाहिए नहीं तो नाटक की आत्मा आकार नहीं पाती है । नाटककार का कार्य केवल नाट्य तत्वों को परस्पर जोड़ना नहीं है बल्कि उनमें रंग.तत्वों और संकेतों की संभावनाओं को भी तलाश करना है । कथानक ए पात्रए देशकाल.वातावरणए भाषाए संवाद आदि नाटक के आधार है पर नाटक प्रर्दशन के योग्य रंगतत्वों के समावेश करने से बनता है ।

रंगतत्व जहाँ एक ओर नाटककार को अर्मूत रूप से रंगमंच से जोड़े रखता है वहीं दूसरी ओर रंगमंच से जुड़े रंगकर्मियों को दिशा.निर्देश भी देता है । निर्देशक रंगतत्वों का सहारा लेकर पथभ्रष्ट होने से बच जाता है । हर नाट्य.कृति का अपना रंगदर्शन होता है ए यदि निर्देशक का अनावश्यक हस्तक्षेप नाटक पर रहेगा तो नाटक की आत्मा को आघात पहुँचने का खतरा रहता है । रंगतत्व के कुछ पक्ष नाट्य.वस्तु से जुड़े होते है तो कुछ उसके तकनीक पक्षों को भी प्रभावित करते है जैसे प्रकाश एध्वनि ए संगीत आदि की योजना या व्यवस्था तकनीकी पक्ष ए नाटक को मंचन का आधार प्रदान करते है । रंगमंच के आंतरिक और बाहृय तत्व मिलकर ही उसे पूर्णता प्रदान करते है । बाहृय.तत्वों में मंच.सज्जा ए दृश्य. योजना ए वेशभूषा ए अभिनय आदि तकनीकी पक्ष आ जाते है तो दूसरी ओर नाटककार का विचार ए कथ्य की अनुभूति ए पात्र तथा चरित्र.चित्रण ए संवाद तथा भाषा द्वारा वह नाटक को पूर्णता प्रदान करता है । रंगमंच पर इन्हीं रंगतत्वों द्वारा नाट्य.प्रस्तुति को साकार किया जाता है ।

रंगमंच के आंतरिक तत्वों का विश्लेषण

रंगमंच के आंतरिक तत्वों का विश्लेषण करने पर सर्वप्रथम तत्त्व नाटककार का कथ्य ए विचार उसकी अनुभूति व संवेदना आता है ए जिसे समझे बिना नाटक का रंगमंच पर प्रस्तुतिकरण करना संभव नहीं है क्योंकि नाटककार कथ्य को समझकर उसके किए निश्चित देश.काल वातावरण का निर्माण करता है । उसी में पात्र तथा चरित्र जीवंत होते है एवही पात्र कथ्य औरविचारों की स्पष्टता को संवाद द्वारा नाटक में परिलक्षित करते है । वास्तव में वही नाटककार सफल नाटककार कहलाता है एजिसमें विचारों की स्पष्टता हो जिसका आधार पाकर निर्देशक अपनी परिकल्पना द्वारा नाटक को नए आयाम प्रदान करता है । संवाद और भाषा जहाँ रंगमंच के बाहृय तत्वों का अनिवार्य अंग है वही वह नाटक और रंगमंच के आंतरिक तत्वों में भी समाहित हो जाता है । नाटककार की भाषा व संवाद .योजना द्वारा उसके पात्रों के

चरित्र की विशेषताएँ उनकी मनरूस्थिति व परिस्थितियाँ को उजागर करती है ए नाटक के मंचन के समय यदि निर्देशक को कोई फेरबदल करना हो तो सर्वप्रथम उसे नाटक को आत्मसात करना होगा ।

रंगमंच के बाह्य तत्वों का विश्लेषण

मंचसज्जा

मंच रंगमंच से जुड़ा शब्द है नाट्य वस्तु का संपूर्ण रूप मंच पर ही साकार होता है । मंच की योजना ए नाटक कि कथावस्तु ए देशकाल वातावरण के अनुसार नियोजित की जाती है मंचसज्जा के अंतर्गत अनेक बातें आती है जैसे मंच का स्थान व आकार गोलए चकोर ए वर्गीय या त्रिकोणीय होना चाहिए । दर्शकों की मंच से दूरी कितनी हो ए मंच पर प्रस्थान और आगमन का सही निर्देश हो ए मंच पर सजाई गई साम्रगी नाटक से संबंध रखती हो । चमक.दमक से ज्यादा मंचसज्जा द्वारा देश काल वातावरण का संप्रेषण हो ।

दृश्य.योजना

नाटक में दृश्यों की प्रधानता होती है । प्रत्येक दृश्य नाटक को उसके चरम.बिंदु तक पहुँचाता है । दृश्यों को आदि ए मध्य और अंत में बाँटा जाता है । स्थान निर्देश नाटक की महत्वपूर्ण घटना से जुड़ी होती है क्योंकि घटनाएँ स्थान रहित नहीं होती है । मोहन राकेश का नाटक ष् लहरों के राजहंस ष् में सुन्दर दृश्य .योजना का प्रस्तुतीकरण मिलता है । अंक तीन में एक निस्तब्ध वातावरण का निर्देश मिलता है ष् कक्ष में सब कुछ व्यवस्थित है दीपाधार के सब दीपक जल रहे है एफिर भी एक सूनेपन का आभास होता है कक्ष में व्यक्ति कोई नहीं है सामने का द्वार बंद है । कुछ क्षण निस्तब्धता ष् । मोहन राकेश की दृश्य .योजना में एक रहस्यमयी वातावरण तैयार होता है ।

अभिनय

अभिनेता रंगमंच का अनिवार्य ए अपरिहार्य ए और महत्वपूर्ण अंग है । अभिनेता.रंगमंच पर सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ए वह अपना और वाणी प्रदान करके नाटक को जीवंत बनता है ।अभिनय चार प्रकार का माना गया है.आंगिक ए वाचिक ए साअत्विक ए आहर्य । जयशंकर प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी नाटक में अभिनय के कुछ तत्वों का संकेत नाटककार द्वारा प्रस्तुत किया गया है । यथा रू

ध्रुवस्वामिनी रू ; क्रोध से कड़ककर द्व ष्अभी निकलो । यहाँ ऐसी निर्लज्जता का नाटक में नहीं देखना चाहती । ष्

वेशभूषा और मंचसज्जा

वेशभूषा रंगमंच पर नाटक की पृष्ठभूमि को तैयार करने में सहायक है ।नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने में वेशभूषा ए अंगसज्जा और रूपसज्जा का विशेष महत्त्व है ए रंगमंच पर अभिनेता तीव्र प्रकाश.व्यवस्था

में इन सभी के अभाव में आभाहीन लगता है । यद्यपि यह प्रभाव प्रेक्षकों पर अधिक समय तक नहीं रहता लेकिन नाटक की अनुभूति तक पहुँचने का यह महत्त्वपूर्ण साधन है जो कि नाटक के प्रस्तुतीकरण में सहायक होता है ।

रंगमंच पर आंतरिक व बाह्य तत्वों द्वारा नाट्य. कथ्य को संप्रेषित किया जा सकता है । नाटककार का वुचार ए कथ्य उसकी पात्रों की परिकल्पना व संवाद व भाषा रंगमंच के आंतरिक ततवों क्र अम्तर्गत आते हैए और मंच सज्जा ए दृश्य. योजना ए वेशभूषा एअंगसज्जा ए अभिनय आदि रंगमंच के बाह्य तत्व है ए जिनके द्वारा रंगमंच पर अतिरिक्त प्रभाव उत्पन्न करके नाट्य कथ्य को सजीवता व जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया जाता है ।

इस प्रकार हम कह सकते है कि रंगमंच पर हो रहे कार्य विधान में नाट्य कथ्य के साथ.साथ रंगमंच के बाह्य व आंतरिक तत्व भी सहायता प्रदान करते है ।

References:

1. Jayshankar Prasad, Dhruvswamini, pg. 25
2. Mohan Rakesh, Lehron ke Rajhans